Commercial plantation farming

① Q. विश्व में उष्णकटिबंधीय बागाती कृषि की प्रमुख विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

परिचय :- बागाती कृषि एक विशिष्ट व्यापारिक कृषि पद्धति है जिसे यूरोपीय उपनिवेशकों ने लैटिन अमेरिका, अफ्रीका तथा एशिया के उष्ण कटिबंधीय तथा उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में विकसित किया। इसका संबंध निर्यात व्यापार के उद्देश्य से है नकदी फसलों के बागान लगाने से है जिसमें बड़े पैमाने पर अधिक पूँजी तथा कुशल प्रबन्धन का निवेश किया जाता है कपास, गन्ना, चाय, कहवा, रबड़ तथा तम्बाकु प्रमुख महत्वपूर्ण बागाती फसलें है

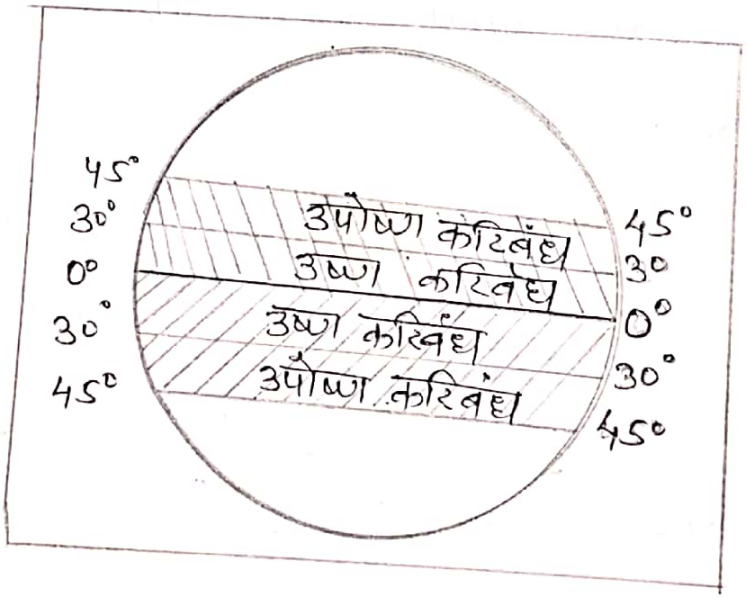

विश्व में बागाती कृषि उष्ण तथा उपोष्ण कटिबंध के क्षेत्रों में की जाती है

Scanned by CamScanner

2. बागाती कृषि की प्रमुख विशेषताएँ :- बागाती कृषि की निम्न विशेषताएँ है।

(i) बागाती कृषि के अन्तर्गत उत्पादित फसलों के लिए अधिक तापमान एवं नियमित वर्षा की आवश्यकता होती है

(ii) बागाती कृषि विश्व में उष्ण कटिबंधीय तथा उपोष्ण कटिबंधीय प्रदेशों तक ही सीमित है।

(iii) बागाती फसलें 40 हेक्टेयर से अधिक आकार के फॉर्मों पर उगायी जाती है किन्तु साथ-साथ छोटे जोत भी पाये जाते है

(iv) बागाती कृषि में एक प्रदेश में केवल एक फसल का विशिष्टीकरण पाया जाता है उदाहरणार्थ भारत तथा श्रीलंका में चाय, ब्राजील एवं कोलम्बिया में कहवा।

(v) बागाती कृषि का प्रबंध वैज्ञानिक रीति से किया जाता है बागातों पर कार्य बड़े लोगों द्वारा किया जाता है कृषि कार्य यथासंभव

Scanned by CamScanner

यंत्रीकृत है।

(vi) बागाती कृषि श्रमप्रधान होने के साथ-साथ पूँजीप्रधान भी है इसमें फसलों के उत्पादन तथा देखभाल हेतु अधिक श्रम की आवश्यकता होती है।

(vii) बागाती कृषि की पकने की अवधि लम्बी होती है अधिकांश बागाती फसलों को पकने में कई वर्ष लगते हैं उदाहरणार्थ रबड़ - ⑥ वर्ष, कोको - ⑤ वर्ष, तेल - ताड़ - ③ वर्ष आदि। पकने की अवधि के दौरान फसलों से कोई आय प्राप्त नहीं होती है।

(viii) बागाती कृषि में यहि वृक्षों या उत्पादक जीवन की समाप्ति पर पुनः भंडारण तथा पुनरोपण में एक बेहद खर्चीला क्रिया है जिसमें पुराने वृक्षों का काटकर भूमि साफ करना, भूमि तैयार करना तथा अन्ततः नये बागान लगाना सम्मिलित है। यही नहीं बागानों के देखभाल, तकनीकी तथा प्रशासनिक स्टाफ के रहने के लिए सुविधाएँ विकसित करने में भी पर्याप्त धन खर्च होता है।

Scanned by CamScanner

(ix) बागाती कृषि सामान्यत: ऐसे भागों में स्थित होते है जहाँ तक परिवहन के साधन उपलब्ध होते है। इसके लिए आँतरिक भागों में रेल या सड़क परिवहन अनिवार्य होता है। खासकर समुद्रतटीय भागों में बागान अधिक पाये जाते है।

(x) बागाती कृषि के अन्तर्गत एक फॉर्म पर प्राय: किसी एक फसल के बागान लगाये जाते है इसमें उगायी जाने वाली फसलों में चाय, कहवा, रबड़, कोको, नारियल, केला, गन्ना, मिर्च-मसाले आदि।

(xi) बागाती में अधिकांश फॉर्मों पर विदेशी स्वामित्व मिलता है किन्तु इनमें प्रयुक्त श्रम स्थानीय होता है उदाहरणार्थ- मलेशिया के रबड़ के बागातों के स्वामी यूरोपीय लोग है ब्राजील का काजेण्डा पर पुर्तगालियों का अधिकार है

(xii) बागाती कृषि में उष्णकटिबंधों की उष्ण तथा आर्द्र दशाएँ कीड़े-मकोड़ों तथा बैक्टीरिया के विकास को प्रोत्साहित करती है तथा रोग फैलाती है अतएव कहवा के बागातों को [शीर्णता] तथा कपास को [बॉल विविल] जैसे रोग लग जाते है

Scanned by CamScanner

(xiii) उष्णकटिबंधीय मिट्टियों की गुणवत्ता अपक्षालन, अपरदन तथा लेटराइटीकरण प्रक्रिया से ग्रसित होती है।

बागाती कृषि का विश्व वितरण :- बागाती कृषि का वितरण को निम्न तीन प्रमुख प्रदेशों में विभाजित किया जा सकता है

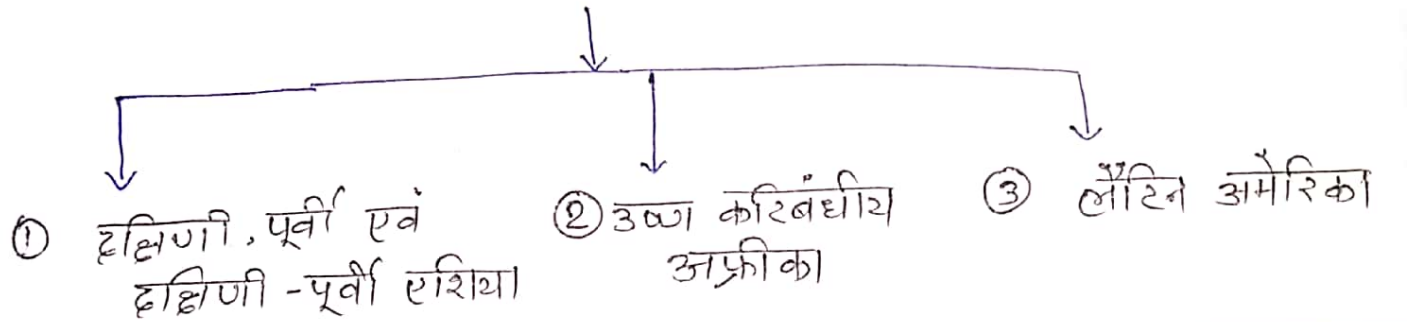

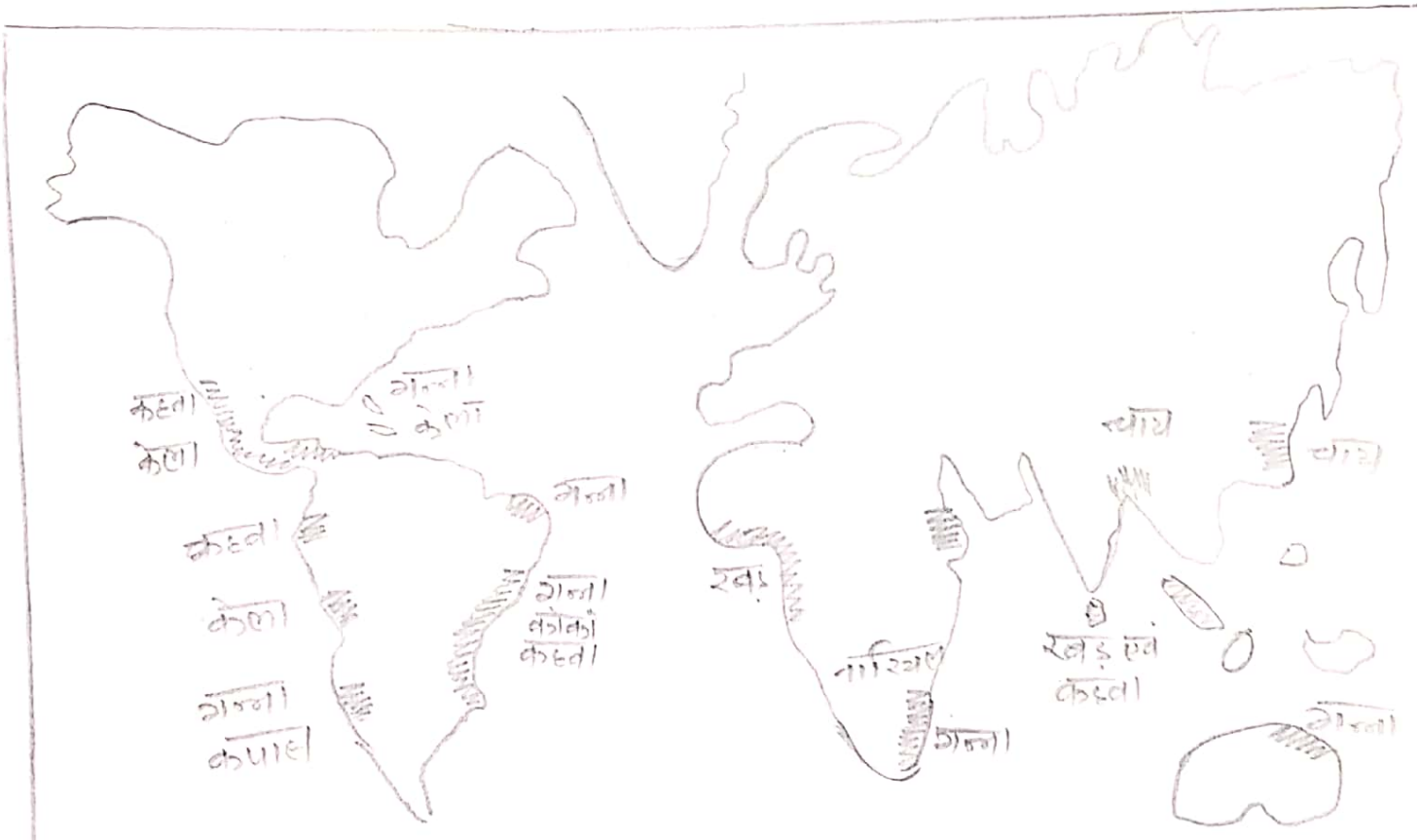

विश्व की प्रमुख बागाती फसलों का वितरण

Scanned by CamScanner

① दक्षिणी, पूर्वी एवं दक्षिणी-पूर्वी एशिया :- भारत के दक्षिणी तथा पूर्वोत्तर पहाड़ी प्रदेशों, श्रीलंका, म्यांमार, थाइलैंड, मलाया और हिन्देशिया में बागाती कृषि की जाती है इसके अन्तर्गत उत्पन्न की जाने वाली फसलें में चाय, कहवा, रबड़ नारियल, कोको, केला आदि प्रमुख है

(i)

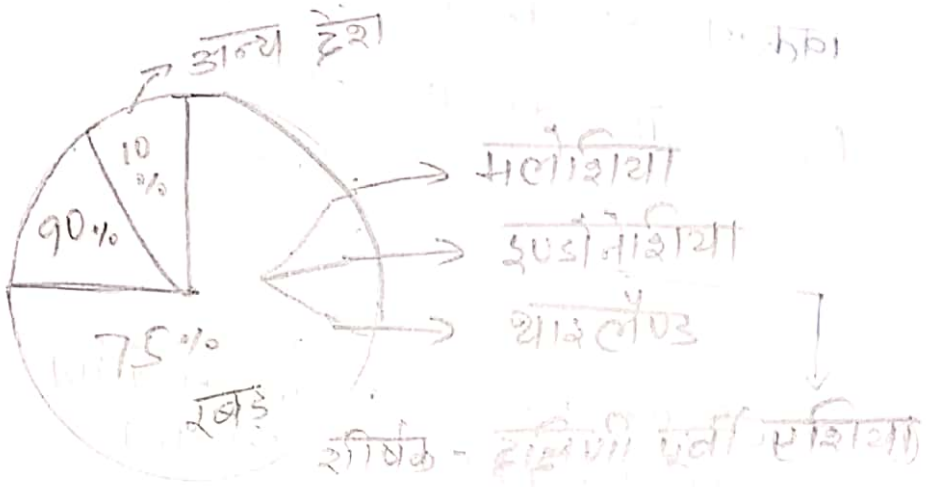

(ii)

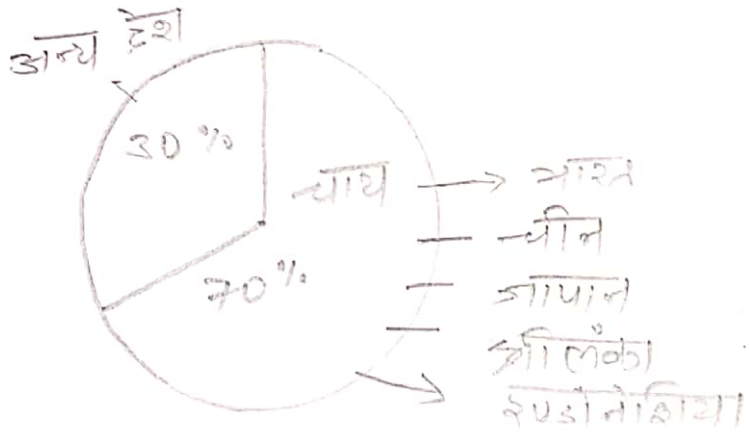

(iii)

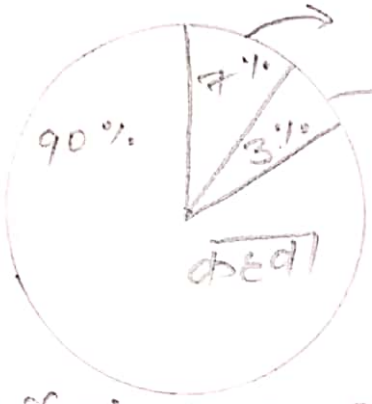

दक्षिणी, पूर्वी एवं दक्षिणी-पूर्वी एशिया में बागाती कृषि का

Scanned by CamScanner

② उष्ण कटिबंधीय अफ्रीका :- इसके अन्तर्गत गिनी तट, मध्य तथा पूर्वी अफ्रीका में कहवा, चाय, केला, कोको आदि के बागान मिलते है। कीनिया, इथोपिया, तंजानिया, मलागासी आदि देशों में थोड़ी मात्रा में कहवा उत्पन्न की जाती है कीनिया, मलावी, युगांडा, आदि चाय उत्पादक देश है नाइजीरिया, लाइबेरिया और जायरे में रबड़ भी पैदा की जाती है

३. लैटिन अमेरिका :- इसके अन्तर्गत मैक्सिको, मध्य अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका के भूभाग सम्मिलित है

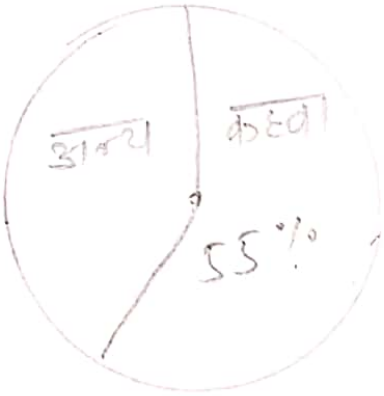

→ लैटिन अमेरिका

रबड़ लैटिन अमेरिका में उत्पादन कम होता है सबसे बड़ा गन्ना उत्पादन के लिए विश्वविख्यात है।

Scanned by CamScanner